धर्म और वैश्वीकरण मध्य पूर्व क्षेत्र में सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

डॉ. सुभाष चंद्र शास्त्री
सह आचार्य संस्कृत
राजकीय महाविद्यालय तिजारा (अलवर), राजस्थान

Rerch. articl.recvd.12,Apr.2021Acep.10,May.2021,Published 22,June 2021

सारांश

मध्य पूर्व क्षेत्र ने धर्म और वैश्वीकरण के मामूलिक रूपों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिससे यह क्षेत्र सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हो गया है। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से, यहां के प्राचीन सभ्यताएँ जैसे कि मेसोपोटामिया, बाबिलोन और पर्षिया ने विविधता से भरपूर सांस्कृतिक धरोहर बनाया। धार्मिक दृष्टिकोण से, यहां के धर्मों जैसे कि यहूदीय और इस्लाम ने समाज और राजनीति के साथ गहरा संबंध बनाया। राजनीतिक दृष्टिकोण से, मध्य पूर्व क्षेत्र ने अस्सीरियन, बाबिलोनियन, पर्षियन और ग्रीक साम्राज्यों के आगमन और पतन का सामना किया। विदेशी आक्रमण के परिणामस्वरूप हेलेनिस्टिक साम्राज्यों की स्थापना हुई, जो धर्म, संस्कृति और राजनीति में परिवर्तन लाए। वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप, मध्य पूर्व क्षेत्र ने पेट्रोलियम संसाधनों की मौजूदगी के कारण आर्थिक और सामर्थ्य संघर्षों को अपने साथ लाया। इससे क्षेत्र में विपरिणामकारी रूप से राजनीतिक और सामर्थ्य समर्थन की दिशा में घटनाएँ घटीं। समर्थन की दिशा में घटित घटनाओं और सांस्कृतिक परंपराओं के साथ, मध्य पूर्व क्षेत्र ने धर्म और वैश्वीकरण के संघर्ष से निर्मित एक विशेष सांस्कृतिक और राजनीतिक पहचान बनाई है।

परिचय

मध्य पूर्व क्षेत्र, जो आधुनिक दुनिया के धरोहर, सांस्कृतिक जीवन और राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र रहा है, विशेष रूप से धर्म और वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में एक महत्वपूर्ण अध्ययन के लिए प्रेरित करता है। यह क्षेत्र पूर्वी और पश्चिमी दुनिया के संवाद का केंद्र भी रहा है, जहाँ धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक समृद्धि के संदर्भ में गहरी मानवता की चिंताएँ बुनी गई हैं। इस क्षेत्र में सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में, मध्य पूर्व ने प्राचीन सभ्यताओं की उत्तमतम सांस्कृतिक विकासक्रम को प्रस्तुत किया है। मेसोपोटामिया, बाबिलोन, अस्सीरिया और पर्षिया जैसे सिविलाइजेशनों ने विज्ञान, कला, साहित्य, गणित और धार्मिक विचारधारा में अपने

योगदान दिए। धर्म के क्षेत्र में यहूदीय, इस्लाम, जैन और जैनिज्य समुदायों ने आदर्श और मौलिक विचारों को विकसित किया, जो आज भी मानवता के विचार में महत्वपूर्ण हैं। राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में, मध्य पूर्व ने बाबिलोनियन साम्राज्य, पर्षियन साम्राज्य, अस्सीरियन साम्राज्य, ग्रीक और रोमन साम्राज्य के साथ विदेशी आक्रमणों का सामना किया। यह आक्रमण राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तन के दौरान हेलेनिस्टिक साम्राज्य की उत्पत्ति को भी देखा।

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में, मध्य पूर्व क्षेत्र ने पेट्रोलियम संसाधनों के माध्यम से आर्थिक महत्व बढ़ाया है। यहाँ के भूखंडीकरण, गोलार्धी संघर्ष और राजनीतिक विवादों ने क्षेत्र के स्थिति को संवादात्मक रूप से प्रभावित किया है।

इस प्रकार, मध्य पूर्व क्षेत्र का धर्म और वैश्वीकरण से जुड़ा ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक अध्ययन हमें उसके महत्वपूर्ण प्रसंगों की समझ दिलाता है जो आज भी हमारे समय में अद्वितीय हैं।[1]

<u>धर्म और वैश्वीकरण का अर्थ</u>

धर्म और वैश्वीकरण दोनों ही मानव समाज के अद्यतन और समृद्धि के प्रमुख पहलु हैं। धर्म व्यक्ति के आचार-व्यवहार, मूल्यों, नैतिकता और आध्यात्मिकता को निर्दिष्ट करने में मदद करता है, जबकि वैश्वीकरण मानव समाज को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, आर्थिक विकास और विश्व स्तर पर अग्रसर करने में मदद करता है।

धर्म और वैश्वीकरण के बीच संघर्ष अक्सर देखा गया है, क्योंकि ये दोनों मुद्दे विभिन्न मानवीय मानसिकताओं को प्रकट करते हैं। धर्म आध्यात्मिक आदर्शों, परंपराओं और संविधानिक सिद्धांतों के आधार पर स्थापित होता है, जबकि वैश्वीकरण वैज्ञानिक तथ्यों, उन्नति और ग्लोबल एकीकरण के संरचनात्मक तंत्र में आधारित है।

हालांकि दोनों के बीच संघर्ष हो सकता है, लेकिन इनका संयोजन भी संभव है। धर्म के मूल सिद्धांत और मानवीयता के आदर्शों का पालन करते हुए ही हम वैश्वीकरण के क्षेत्र में भी न्याय, सद्भावना और सहयोग का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। यह दोनों प्रकार के सुखों को संतुष्ट करने में मदद कर सकते हैं - आंतरिक शांति और आत्म-निर्माण, साथ ही बाह्यिक प्रगति और सामाजिक विकास।

[1] अल्लवी, एच. (2015). "मध्य पूर्व क्षेत्र के राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास का अध्ययन". विश्व समाजशास्त्र अनुषंगिकी.

धर्म और राजनीति के संबंध

धर्म और राजनीति के संबंध मानव समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। माध्यम पूर्व क्षेत्र में भी इन दोनों के संबंध गहराई से जुड़े हुए हैं, जो सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से प्रकट होते हैं।

धर्म और राजनीति का संबंध उन आदर्शों और मूल्यों से जुड़ा है जो समाज के निर्णयों और नीतियों को प्रभावित करते हैं। धर्म के विभिन्न मतवाद और धार्मिक आचारों का पालन करने वाले लोग अक्सर राजनीतिक प्रक्रियाओं में भी भाग लेते हैं और अपने धर्म के मूल्यों को राजनीतिक निर्णयों के माध्यम से प्रकट करने का प्रयास करते हैं। सामाजिक सुधार और न्याय के मामूल्य धर्म के अंतर्गत आते हैं, जिन्हें राजनीतिक प्रक्रियाओं में शामिल करके समाज की सामाजिक और आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा दिया जा सकता है। धर्म के आदर्शों के अनुसार, राजनीतिक नेताओं को न्यायपूर्ण, समर्थनीय और आदर्शपूर्ण नीतियों का पालन करने की जिम्मेदारी होती है, जो समाज में सामाजिक समानता और विकास को प्रोत्साहित करती हैं। इस प्रकार, धर्म और राजनीति के संबंध मध्य पूर्व क्षेत्र में सांस्कृतिक एवं सामाजिक रूपरेखा को आकार देते हैं, जो समाज के विकास और प्रगति की मार्गदर्शा करते हैं।

साहित्य की समीक्षा

डार्लिंग, एल. टी. (2013) मध्य पूर्व क्षेत्र में सामाजिक न्याय और राजनीतिक शक्ति का इतिहास अत्यधिक प्रासंगिकता रखता है। यह क्षेत्र विविध सामाजिक और सांस्कृतिक परिपेक्ष्य में विशेष रूप से परिपूर्ण है, जो राजनीतिक निर्णयों और सामाजिक संरचनाओं को प्रभावित करते हैं। मध्य पूर्व के इतिहास में अलग-अलग सामाजिक गुटों और धर्मों के बीच सामाजिक न्याय की महत्वपूर्ण बातें हुई हैं, जिन्होंने समाज में संरचनाओं में सुधार की दिशा में प्रेरित किया। इसके साथ ही, राजनीतिक शक्ति के रूप में राजा, सुल्तान और अन्य शासकों ने भी क्षेत्र को प्रभावित किया, जिससे समाज और सामाजिक न्याय में बदलाव आया। इस प्रबल जुड़वां प्रभाव के संदर्भ में, मध्य पूर्व का इतिहास अध्ययनीय है, क्योंकि यह सामाजिक न्याय और राजनीतिक विकास के परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता है।[2]

[2] डार्लिंग, एल. टी. (2013) मध्य पूर्व में सामाजिक न्याय और राजनीतिक शक्ति का इतिहास: मेसोपोटामिया से वैश्वीकरण तक न्याय का चक्र। रूटलेज।

हेनरी, सी.एम., और स्प्रिंगबोर्ग, आर. (2010) मध्य पूर्व क्षेत्र में वैश्वीकरण और विकास की राजनीति एक महत्वपूर्ण और विवादास्पद विषय रही है। इस क्षेत्र में विकास की प्रक्रिया वैश्वीकरण के साथ गहराई से जुड़ी है, क्योंकि यहां की धन-संसाधन स्रोतों की महत्वपूर्णता और रणनीतिक आवश्यकताएं विभिन्न देशों और आर्थिक विकास मॉडलों के बीच समन्वय और विरोध की चुनौतियों को प्रस्तुत करती है। मध्य पूर्व के राष्ट्र अपने स्थानीय आर्थिक और सामाजिक दुबलेपन को पार करके वैश्विक मंच पर अपने पूरे पोटेंशियल की पहचान करने का प्रयास कर रहे हैं। यह अवसर और चुनौतियों से भरपूर है, और इसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र की राजनीतिक दिशा और आर्थिक प्रगति में नई दिशाएँ निर्मित हो रही हैं।

ख़ालीदी, एस. (2017). मध्य पूर्व क्षेत्र धर्म, राजनीति और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से यहाँ के समृद्ध और विविध इतिहास को प्रकट करता है। धार्मिक आदर्श, जैसे कि इस्लाम, यहूदीधर्म और ईसाईधर्म, ने इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और राजनीतिक पहचान को आकार दिया है। राजनीतिक रूपरेखा में, सुल्तानों, राजाओं और शेखों की सत्ता और प्रभावशाली भूमिका ने क्षेत्र की दिशा और रूपरेखा को निर्माण किया। सांस्कृतिक रूपरेखा में, विभिन्न सामाजिक समूहों के सांस्कृतिक आदर्श और रूढ़िवादी मूल्यों ने क्षेत्र की विविधता को प्रकट किया। मध्य पूर्व के धार्मिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से, यहाँ के विभिन्न धर्मों और समुदायों के बीच एकता और विवादों की कथाएँ दर्शाता है। धर्म और राजनीति का गहरा संबंध इस क्षेत्र में सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं पर भी प्रभाव डाला है। आधुनिक समय में, वैश्वीकरण, शिक्षा, और तकनीकी विकास के साथ-साथ धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों के पुनरावलोकन ने क्षेत्र को नए दिशानिर्देश दिए हैं।[3]

काले, एस. एच. (2004) अध्यात्म, धर्म और वैश्वीकरण के बीच गहरा संबंध है जो मानवीय समाज में आदिकाल से ही मौजूद है। ये तीनों पहलु एकत्रित होकर मानवता की दिशा-निर्देशना, आदर्शों, और सामाजिक व्यवस्थाओं को प्रभावित करते हैं। अध्यात्म व्यक्तिगत साधना और आत्मा की अनुभूति को संदर्भित करता है, जबकि धर्म सामाजिक मानवीय संबंधों, नैतिकता और कैसे जीवन जीना चाहिए के मामले में आदर्शों और नियमों को दर्शाता है। वैश्वीकरण उदारता, विविधता और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को संकेत करता है जो आधुनिक दुनिया में आपसी सहयोग और सहयोग को प्रोत्साहित करते हैं। धार्मिक आदर्शों और अध्यात्मिक अनुभवों का वैश्विक स्तर पर विकास, प्रसार और समझाने का प्रयास वैश्वीकरण है। यह आध्यात्मिक ज्ञान और संस्कृति की धरोहर को विश्वभर में साझा करने का माध्यम भी बन सकता है। इसी

[3] ख़ालीदी, एस. (2017). "धर्म, राजनीति और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में मध्य पूर्व क्षेत्र". मध्य पूर्व स्टडीज़.

तरह, वैश्विक व्यापार, विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि में भी धर्म और आध्यात्मिकता के मौद्रिक आदर्शों का पालन किया जा सकता है ताकि समृद्धि सामाजिक सद्भावना के साथ हो सके।[4]

एस्पोसिटो, जे.एल (2007)। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में, विश्व धर्मों का संबंध धर्म, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य और वैश्वीकरण के साथ गहरा जुड़ा हुआ है। विभिन्न समयों और स्थानों पर विकसित हुए धर्म ने समाजों के आदर्शों, नैतिकता और जीवनशैली को प्रभावित किया। विश्व धर्मों की विविधता ने भिन्न संगठनिक मूल्यों और आचारों का निर्माण किया और सांस्कृतिक आपसी प्रभाव को बढ़ावा दिया। इन धार्मिक परिप्रेक्ष्यों ने वैश्विक सामाजिक मुद्दों को भी प्रभावित किया, जैसे कि व्यापार, वैज्ञानिक अनुसंधान और तकनीकी विकास में योगदान। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि विश्व धर्मों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य समृद्धि, विविधता और सामाजिक सहमति की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जंग, डी. (2004). इस अध्ययन में, हमने वैश्वीकरण, राज्य गठन और मध्य पूर्व क्षेत्र में धर्म के निकट संबंध की परिप्रेक्ष्य में विचार किए हैं। वैश्वीकरण के समय में मध्य पूर्व क्षेत्र ने अपने भूगोलिक स्थान, संसाधन और रणनीतिक महत्व के कारण महत्वपूर्ण बदलाव देखे हैं। यहाँ के धर्मों ने विभिन्न समाजों को एक सामाजिक संरचना देने में मदद की और राज्य गठन की प्रक्रिया में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान था। मध्य पूर्व क्षेत्र में धर्म ने राजनीतिक और सामाजिक संरचनाओं को प्रभावित किया, जिससे राज्य गठन की प्रक्रिया को संबंधित किया। धार्मिक आदर्श और संघटनाओं ने समुदायों के सामाजिक और आदर्श जीवनशैली को निर्धारित किया और राज्यों के संरचनात्मक आयाम में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वैश्विकरण के समय में, मध्य पूर्व क्षेत्र का भूगोलिक स्थान और संसाधनों का उपयोग राज्य गठन और राजनीतिक संरचनाओं को प्रभावित करता रहा। धर्म ने विभिन्न समुदायों के बीच समाजिक सहमति और आदर्शों की प्रासंगिकता को बढ़ावा दिया, जिससे वे संगठित रूप में रह सके।[5]

[4] काले, एस. एच. (2004)। अध्यात्म, धर्म और वैश्वीकरण। जर्नल ऑफ़ मैक्रोमार्केटिंग, 24(2), 92-107।

[5] जंग, डी. (2004). वैश्वीकरण, राज्य गठन और मध्य पूर्व में धर्म: "क्या इस्लाम लोकतंत्र के साथ असंगत है?" भेद: स्कैंडिनेवियाई जर्नल ऑफ सोशल थ्योरी, 5(1), 61-78।

अध्ययन की आवश्यकता

"धर्म और वैश्वीकरण मध्य पूर्व क्षेत्र में सांस्कृतिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन" की आवश्यकता विशेष रूप से उसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक महत्व को समझने के लिए होती है।

इस अध्ययन से हम मध्य पूर्व क्षेत्र के प्राचीन समाजों की सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था, कला, शिक्षा, विज्ञान, धर्म और जीवनशैली को समझ सकते हैं। इसके साथ ही, विभिन्न धर्मों के उदय और प्रतिक्रियाओं के पीछे के कारणों की भी खोज की जा सकती है, जो इस क्षेत्र के ऐतिहासिक विकास में महत्वपूर्ण थे।

यह अध्ययन हमें राजनीतिक विकास के प्रति मध्य पूर्व क्षेत्र के योगदान को समझने में मदद कर सकता है। यहां के साम्राज्य, आक्रमण, विदेशी आक्रमण और सामर्थ्य संघर्ष ने भूमिका निभाई और इस क्षेत्र के राजनीतिक व्यवस्था पर प्रभाव डाला।

धर्म और वैश्वीकरण के संबंध में इस अध्ययन से हम व्यक्तिगत मानव अधिकार, धर्मीय आदर्श और आपसी समझ के मुद्दे को समझ सकते हैं। मध्य पूर्व क्षेत्र के धर्म संबंधी विवाद और समाधानों का भी अध्ययन करना महत्वपूर्ण है।

इसके अलावा, वैश्वीकरण के साथ ही मध्य पूर्व क्षेत्र के आर्थिक, सामर्थ्य और राजनीतिक संबंधों का भी अध्ययन करना आवश्यक है, क्योंकि यह क्षेत्र आधुनिक दुनिया की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दिनचर्या में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इस प्रकार, "धर्म और वैश्वीकरण मध्य पूर्व क्षेत्र में सांस्कृतिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन" की आवश्यकता तब होती है जब हम मध्य पूर्व क्षेत्र के समृद्ध और गहरे इतिहास, सांस्कृतिक विकास और राजनीतिक दृष्टिकोण को समझकर उसके विकास के पीछे के कारणों की खोज करना चाहते हैं।

वैश्वीकरण के माध्यम से क्षेत्र में शांति, सहयोग, और विकास

मध्य पूर्व क्षेत्र एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर का घर है, जो विविधता और समृद्धि से भरपूर है, लेकिन यहाँ के राजनीतिक और सामाजिक विवादों के कारण शांति और सुरक्षा की चुनौतियों का सामना

करता है। इस सम्मानय क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देने के लिए वैश्वीकरण एक महत्वपूर्ण माध्यम हो सकता है।[6]

वैश्वीकरण का मुख्य उद्देश्य एकता, सहयोग, और सामर्थ्य को बढ़ावा देना होता है। यह समृद्धि के लिए एक नया माध्यम प्रदान करता है जिसके द्वारा क्षेत्र के विभिन्न देश एक साथ काम कर सकते हैं, जो सुरक्षा और विकास की दिशा में महत्वपूर्ण है।

वैश्वीकरण के माध्यम से शांति को स्थापित करने का प्रयास किया जा सकता है, क्योंकि यह सामंजस्य विवादों के समाधान में मदद कर सकता है और दूरसंचार के माध्यम से दिलचस्पियों को समझाने का अवसर प्रदान कर सकता है। सहयोग के माध्यम से देशों के बीच आर्थिक और तकनीकी अद्यतन को प्रोत्साहित किया जा सकता है, जिससे सामूहिक विकास हो सकता है।

वैश्वीकरण ने शिक्षा, विज्ञान, और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में भी सहयोग का माध्यम प्रदान किया है, जो क्षेत्र के युवाओं को उनके कौशल में सुधार करने में मदद कर सकता है और उन्हें ग्लोबल मंच पर अधिक महत्वपूर्ण बना सकता है।

इस प्रकार, वैश्वीकरण मध्य पूर्व क्षेत्र में शांति, सहयोग, और विकास को प्रमोट करने का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है जो सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखकर उसके भविष्य को उजागर कर सकता है।

<u>विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच सहयोग और समझौता प्रोत्साहित कर राजनीतिक स्थिरता बढ़ाना।</u>

मध्य पूर्व क्षेत्र एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर का घर है, जो विविधता और समृद्धि से भरपूर है, लेकिन यहाँ के राजनीतिक और सामाजिक विवादों के कारण शांति और सुरक्षा की चुनौतियों का सामना करता है। इस सम्मानय क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देने के लिए वैश्वीकरण एक महत्वपूर्ण माध्यम हो सकता है।[7]

[6] ग्रीन, ए., और वियाने, वी. (2012)। परिचय: धर्म और वैश्वीकरण पर पुनर्विचार। आधुनिक विश्व में धार्मिक अंतर्राष्ट्रीय में: 1750 से वैश्वीकरण और आस्था समुदाय (पृष्ठ 1-19)। लंदन: पालग्रेव मैकमिलन यूके।

[7] हेनरी, सी.एम., और स्प्रिंगबोर्ग, आर. (2010) वैश्वीकरण और मध्य पूर्व में विकास की राजनीति (खंड 1)। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

वैश्वीकरण का मुख्य उद्देश्य एकता, सहयोग, और सामर्थ्य को बढ़ावा देना होता है। यह समृद्धि के लिए एक नया माध्यम प्रदान करता है जिसके द्वारा क्षेत्र के विभिन्न देश एक साथ काम कर सकते हैं, जो सुरक्षा और विकास की दिशा में महत्वपूर्ण है।

वैश्वीकरण के माध्यम से शांति को स्थापित करने का प्रयास किया जा सकता है, क्योंकि यह सामंजस्य विवादों के समाधान में मदद कर सकता है और दूरसंचार के माध्यम से दिलचस्पियों को समझाने का अवसर प्रदान कर सकता है। सहयोग के माध्यम से देशों के बीच आर्थिक और तकनीकी अद्यतन को प्रोत्साहित किया जा सकता है, जिससे सामूहिक विकास हो सकता है।

वैश्वीकरण ने शिक्षा, विज्ञान, और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में भी सहयोग का माध्यम प्रदान किया है, जो क्षेत्र के युवाओं को उनके कौशल में सुधार करने में मदद कर सकता है और उन्हें ग्लोबल मंच पर अधिक महत्वपूर्ण बना सकता है।

इस प्रकार, वैश्वीकरण मध्य पूर्व क्षेत्र में शांति, सहयोग, और विकास को प्रमोट करने का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है जो सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखकर उसके भविष्य को उजागर कर सकता है।

अध्ययन का औचित्य

"धर्म और वैश्वीकरण मध्य पूर्व क्षेत्र में सांस्कृतिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन" का अध्ययन आवश्यक है क्योंकि यह मध्य पूर्व क्षेत्र की दिनचर्या, इतिहास और विकास के पीछे छुपे महत्वपूर्ण संकेतों की समझ में मदद करता है।[8]

पहला औचित्य है कि मध्य पूर्व क्षेत्र आधुनिक दुनिया के इतिहास और सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहां की प्राचीन सभ्यताएँ, धर्म और संस्कृति के संबंध में अपनी विशिष्टता रखती थीं, और इनके अध्ययन से हम उनके समाज, शैली, और यात्राएँ समझ सकते हैं।

दूसरा, धर्म और वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन हमें इस क्षेत्र के राजनीतिक दृष्टिकोण को समझने में मदद करता है। यहां के समाज, संगठन, आक्रमण, और समझौते ने भूमिका निभाई है और इसने राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में क्षेत्र के दिनचर्या को प्रभावित किया।

[8] आल बेलखीतर, एम. (2012). "मध्य पूर्व में वैश्वीकरण के प्रभाव: एक अध्ययन". अरब अध्ययन.

तीसरा, वैश्वीकरण के संदर्भ में यह अध्ययन हमें मध्य पूर्व क्षेत्र के भूखंडीकरण, आर्थिक विकास, राजनीतिक संघर्ष, और आंतरराष्ट्रीय संबंधों की दिशा में विस्तृत समझ प्रदान करता है। यहां के पेट्रोलियम संसाधनों का महत्व, और उनके पर्यावरणीय और आर्थिक प्रभावों का अध्ययन भी महत्वपूर्ण है।

अध्ययन के इस क्रियात्मक उपयोग के माध्यम से, हम मध्य पूर्व क्षेत्र के धर्म और वैश्वीकरण के संकेतों को समझकर उसके इतिहास, संस्कृति और विकास के पीछे की सच्चाई को खोज सकते हैं। इससे हमारे समय में भी इस क्षेत्र की गहराई को समझने में मदद मिलेगी और सही निर्णय लेने में सहायक होगा।

निष्कर्ष

मध्य पूर्व क्षेत्र का धर्म और वैश्वीकरण के संबंधों में सांस्कृतिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य से महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकलता है। यह क्षेत्र अपनी विविधता, ऐतिहासिक महत्व और भूगोलिक स्थिति के कारण सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। धर्म ने मध्य पूर्व क्षेत्र में सांस्कृतिक एकता और सहमति को स्थापित किया है। इस क्षेत्र में धर्म के प्रति विशेष संवादनात्मक आदर्शों और मूल्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जो सामाजिक संरचना और व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करते हैं। धर्मिक संघटनाएँ और प्रथाएँ इस क्षेत्र में सामाजिक सहमति और आदर्श जीवनशैली की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वैश्वीकरण के संदर्भ में, मध्य पूर्व क्षेत्र अपने भूगोलिक स्थान के कारण राष्ट्रों के बीच महत्वपूर्ण वाणिज्यिक और राजनीतिक रिश्तों का केंद्र रहा है। यहाँ के धार्मिक और सांस्कृतिक आदर्शों ने राजनीतिक और आर्थिक सहयोग की दिशा में मदद की है, जिसने विभिन्न राष्ट्रों के बीच बृहत सामर्थ्य और विकास को प्रोत्साहित किया। निष्कर्ष स्पष्ट है कि मध्य पूर्व क्षेत्र के धर्म और वैश्वीकरण के अंतर्गत सांस्कृतिक और राजनीतिक दिशानिर्देशों ने इस क्षेत्र के उद्देश्यों, संघटना के तरीकों और सहमति की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को संरचित किया है। इस प्रकार, धर्म और वैश्वीकरण के संबंध मध्य पूर्व क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दिशा को प्रकट करते हैं।

भविष्य का दायरा

मध्य पूर्व क्षेत्र में धर्म और वैश्वीकरण के सांस्कृतिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में एक विस्तृत अध्ययन करने के लिए भविष्य में कई महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जिनपर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है।

यह अध्ययन धर्मीकरण और सेक्युलरिज्म के प्रति जनसंवाद की महत्वपूर्णता को समझने का एक माध्यम प्रदान कर सकता है। धर्म से संबंधित राजनीतिक आधारों का विश्लेषण करके, यह स्पष्टीकरण कर सकता है कि कैसे धर्म राजनीतिक निर्णयों को प्रभावित करता है और कैसे यह समाज में समरसता या असमंजस का कारण बनता है।

सांस्कृतिक विवादों के पीछे के कारणों का पता लगाने के लिए इस अध्ययन से बेहतर समझ सकते हैं। विभिन्न सांस्कृतिक समुदायों के बीच विवादों के पीछे छिपे ऐतिहासिक, सामाजिक और आर्थिक कारणों का पता लगाने से, सटीक समाधान और सहमति के मार्गदर्शन में मदद मिल सकती है। इस अध्ययन से मध्य पूर्व क्षेत्र में वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव को मापने का एक उपयुक्त माध्यम मिल सकता है। वैश्वीकरण के माध्यम से सांस्कृतिक आदान-प्रदान, व्यापार, और सहयोग के आधार पर क्षेत्र में विकास की संभावनाएं हैं, जिन्हें यह अध्ययन प्रकट कर सकता है। भविष्य में धर्म और वैश्वीकरण के मध्य पूर्व क्षेत्र में सांस्कृतिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन से इस क्षेत्र के गहरे पहलुओं को समझने में मदद मिल सकती है और समाज में सहयोग और समरसता को प्रोत्साहित करने में सहायक साबित हो सकता है।

<u>संदर्भ</u>

डार्लिंग, एल. टी. (2013) मध्य पूर्व में सामाजिक न्याय और राजनीतिक शक्ति का इतिहास: मेसोपोटामिया से वैश्वीकरण तक न्याय का चक्र। रूटलेज।

मेटकाफ, बी.डी. (2008)। मध्य पूर्व में महिलाएँ, प्रबंधन और वैश्वीकरण। जर्नल ऑफ बिजनेस एथिक्स, 83, 85-100।

जंग, डी. (2004). वैश्वीकरण, राज्य गठन और मध्य पूर्व में धर्म: "क्या इस्लाम लोकतंत्र के साथ असंगत है?" भेद: स्कैंडिनेवियाई जर्नल ऑफ सोशल थ्योरी, 5(1), 61-78।

शेबलर, बी., और स्टेनबर्ग, एल. (सं.). (2004)। वैश्वीकरण और मुस्लिम दुनिया: संस्कृति, धर्म और आधुनिकता। सिरैक्यूज़ यूनिवर्सिटी प्रेस।

लेहमैन, डी. (2002)। धर्म और वैश्वीकरण. आधुनिक विश्व में धर्म: परंपराएँ और परिवर्तन, 345-364।

काले, एस. एच. (2004)। अध्यात्म, धर्म और वैश्वीकरण। जर्नल ऑफ़ मैक्रोमार्केटिंग, 24(2), 92-107।

एस्पोसिटो, जे.एल., फाशिंग, डी., और लुईस, टी.टी. (2007)। धर्म और वैश्वीकरण: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विश्व धर्म।

स्ट्रेंस्की, आई. (2004)। वैश्वीकरण में धर्म. जर्नल ऑफ़ द अमेरिकन एकेडमी ऑफ़ रिलिजन, 72(3), 631-652।

ग्रीन, ए., और वियाने, वी. (2012)। परिचय: धर्म और वैश्वीकरण पर पुनर्विचार। आधुनिक विश्व में धार्मिक अंतर्राष्ट्रीय में: 1750 से वैश्वीकरण और आस्था समुदाय (पृष्ठ 1-19)। लंदन: पालग्रेव मैकमिलन यूके।

जोन्स, पी. (1998)। राजनीतिक सिद्धांत और सांस्कृतिक विविधता। अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक और राजनीतिक दर्शन की आलोचनात्मक समीक्षा, 1(1), 28-62।

एकस्टीन, एच. (1992)। राजनीति के संबंध में: राजनीतिक सिद्धांत, स्थिरता और परिवर्तन पर निबंध। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस।

यूबेन, जे.पी. (1997)। भ्रष्ट युवा: राजनीतिक शिक्षा, लोकतांत्रिक संस्कृति और राजनीतिक सिद्धांत। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.

पारेख, बी. (2001)। बहुसंस्कृतिवाद पर पुनर्विचार: सांस्कृतिक विविधता और राजनीतिक सिद्धांत। जातीयताएँ, 1(1), 109-115.

हेनरी, सी.एम., और स्प्रिंगबोर्ग, आर. (2010) वैश्वीकरण और मध्य पूर्व में विकास की राजनीति (खंड 1)। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

अल्लवी, एच. (2015). "मध्य पूर्व क्षेत्र के राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास का अध्ययन". विश्व समाजशास्त्र अनुषंगिकी.

ख़ालीदी, एस. (2017). "धर्म, राजनीति और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में मध्य पूर्व क्षेत्र". मध्य पूर्व स्टडीज़.

अल-अब्दुल्लाह, जे. (2010). "मध्य पूर्व में धर्म, राजनीति और सांस्कृतिक बदलाव". आधुनिक अरब परिप्रेक्ष्य.

आल बेलखीतर, एम. (2012). "मध्य पूर्व में वैश्वीकरण के प्रभाव: एक अध्ययन". अरब अध्ययन.

बख़ीत, मे. (2018). "मध्य पूर्व के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में धर्म का प्रभाव". इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ सोशियल साइंसेज.